AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

भारत के आर्थिक विकास में उद्यमिता की भूमिकाः एक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. पुष्पा रमेश
एसोसिएट प्रोफेसर वाणिज्य एवं प्रबंध विभाग
माता गुजरी महिला महाविद्यालय ऑटोनोमस
जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

शोध सार

किसी भी देश के आर्थिक विकास की प्रक्रिया में उद्यमी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं निर्णायक रहती है। वास्तव में उद्यमी को आर्थिक विकास का प्रेरक तत्व, समन्वयकर्ता, निर्णयकर्ता एवं संगठनकर्ता के रूप में माना जाता है। आर्थिक विकास के संबंध में कहा जाता है, कि उद्यमी वह व्यक्ति है, जो उत्पादन के अप्रयुक्त साधनों को उत्पादक कार्यों में नियोजित करता है ताकि देश लाभ एवं उत्पादकता की ओर अग्रसर हो सके।

मुख्य शब्द

आर्थिक विकास, उद्यमी, उद्यमिता विकास, निर्यात संवर्धन.

प्रस्तावना

किसी भी देश के आर्थिक विकास की प्रक्रिया में उद्यमियों की सक्रिय, विशिष्ट एवं निर्णायक भूमिका होती है। वे अपने उपक्रम का संचालन करते हुए समाज और राष्ट्र के प्रति संवेदनशीलता के साथ अपनी कर्तव्य निष्ठा एवं कर्मशील भूमिका का निर्वाह भी करते हैं। उनकी भूमिकाओं को विकास की प्रक्रिया में सकारात्मक रूप में माना गया है, परंतु कभी–कभी जाने अनजाने में उद्यमियों की क्रियाओं के परिणाम स्वरुप सामाजिक समरसता व स्थिरता तथा क्षेत्रीय असंतुलन भी हो जाता है। ऐसी स्थिति में उद्यमियों का यह दायित्व बनता है, कि वह औद्योगिक विकास की प्रक्रिया में नियोजित आधार पर कुछ समुन्नत उपाय करें ताकि देश में सामाजिक व आर्थिक विकास की गति सर्व कल्याणकारी हो सके। आर्थिक विकास की प्रक्रिया में उद्यमियों को पथ प्रदर्शक, संरक्षणकर्ता, साधन सृजनकर्ता, समन्वय कर्ता एवं नियामक के रूप में माना गया है।

उद्देश्य

- आर्थिक विकास के मूल पहलू एवं उद्यमियों की भूमिका का अध्ययन।
- भारत के आर्थिक विकास में उद्यमियों की भूमिका का अध्ययन।
- उद्यमियों का,आर्थिक विकास में सामान्य एवं विशिष्ट भूमिका का अध्ययन।
- भारत के आर्थिक विकास में उद्यमिता के संबंध में महत्वपूर्ण सुझाव।

आर्थिक विकास – मूल पहलू एवं उद्यमियों की भूमिका

आर्थिक विकास की संरचनात्मक प्रक्रिया में उद्यमी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं निर्णायक है। इस शोध पत्र के द्वारा आर्थिक विकास से संबंधित उन मूल आधारों व पहलुओं का अध्ययन किया गया है, जो किसी न किसी

रूप में उद्यमशील क्रियाओं व व्यवहारों को प्रभावित कर औद्योगिक विकास की गति सुनिश्चित करते हैं।

आर्थिक विकास के मूल पहलुओं व उद्यमी क्रियाओं व व्यवहारों के साथ उनकी संबद्धता इस प्रकार हैः

1. **शुद्ध राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आयः** किसी भी देश की शुद्ध राष्ट्रीय आय प्रति व्यक्ति आय एव आय अर्जन क्षमताओं का वहां के लोगों के कर क्षमताओं, उपभोग स्तर एवं जीवन स्तर पर असर पड़ता है। किसी भी व्यक्ति या समूह के आय स्तर में सुधार के लिए उद्यमियों द्वारा इस प्रकार सहायता दी जाती हैः
   1) प्रभावी नेतृत्व प्रदान किया जाना।
   2) नियोजित व संतुलित उत्पादन को बढ़ावा देना।
   3) जवाब देही संस्कृति के निर्माण हेतु प्रयास।
   4) बचत विनियोजन के स्तर को लाभदायक क्षेत्र की ओर उन्मुख करवाना।
2. **उपभोग की संरचना व जीवन स्तरः** उपभोक्ताओं की रुचियां, इच्छाओं, फैशन आवश्यकताओं के अनुरूप वस्तुओं व सेवाओं का निर्माण किया जाना, दायित्व बोध चुनौतियां बनता जा रहा है, अतः समग्र ग्राहक संतुष्टि बनाए रखने हेतु उद्यमियों द्वारा कदम उठाए जा सकते हैंः
   1) श्रेष्ठ एवं उपयोगी वस्तुओं का निर्माण,
   2) नवकरण व उपभोग की संरचना में सुधार किया जाता है।
3. **आय का वितरणः** देश में आय वितरण की असमानताओं के लिए असंतुलित औद्योगिक विकास, पूंजी निर्माण प्रक्रिया के दोष, रोजगार के अवसरों का असंतुलित होना, एवं निम्न उत्पादकता, बेरोजगारी की समस्या प्रमुख कारण है। उद्यमियों द्वारा इस संबंध में स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप नवकरण व संसाधन क्षमता का विस्तार एवं आधुनिक विधियों से काम लेकर उत्पादकता एवं रोजगार के नए अवसरों का सृजन किया जा सकता है।
4. **व्यावसायिक संरचनाः** उद्यमियों द्वारा नवीन उपक्रमों की स्थापना के क्रम में जोखिमों से ओत प्रोत , बाह्य वातावरण की अनुकूलता एवं प्रतिकूलता का अध्ययन किया जा सकता है। यहां स्थिती विश्लेषण का उपयोग कर वातावरणीय घटकों के आधार पर व्यावसायिक अवसरों व व्यवसायिक विकास के प्रेरक तत्वों का लाभ उठाया जा सकता है।
5. **आर्थिक नीतियांः** उद्यमियों द्वारा इन नीतियों की अनुकूलताओं व प्रतिकूलताओं की प्रभावशीलता का ध्यान रखना पड़ता है। उन्हें नीतियों से व्यावहारिक ज्ञान व सुविधाओं की प्राप्ति के साथ व्यावसायिक व्यूह रचनाओं का निर्धारण कर नीतियों के क्रियान्वयन हेतु प्रयत्नशील रहना चाहिए।
6. **संसाधनों का क्षमता विकासः** भौतिक व मानवीय संसाधनों की प्राप्ति व उनके क्षमता विकास के संदर्भ में उद्यमियों के समक्ष मितव्ययिताओं की प्राप्ति एवं अनु उत्पादक खर्चों को कम करने संबंधी चुनौतियां प्रकट होती है। उन्हें इस बारे में अनुकूलतम आकर के निर्धारण व लागत नियंत्रण से संबंधित उपाय व व्यूह रचनाओं को अपनाना चाहिए।
7. **रोजगार स्तरः** उद्यमी कार्यों व व्यवहारों को प्रोत्साहित करके रोजगार के अवसरों का सृजन किया जा सकता है।

आर्थिक विकास की प्रक्रिया में उद्यमी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। विकास में उद्यमी की भूमिका को सामान्य एवं विशिष्ट दोनों रूपों में स्पष्ट किया जा सकता है।

उद्यमी की सामान्य भूमिका

देश के आर्थिक विकास में उद्यमियों की सामान्य भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उद्यमियों का सामान्य भूमिका

के अंतर्गत यह दायित्व बनता है, कि वह औद्योगिक विकास की प्रक्रिया में नियोजित आधार पर कुछ समुन्नत उपाय करें, ताकि देश में सामाजिक व आर्थिक विकास की गति सर्व कल्याणकारी हो सके। देश के आर्थिक विकास में उद्यमी की सामान्य भूमिका इस प्रकार हैः

1. **सामाजिक स्थिरता में उद्यमी की भूमिकाः** सामाजिक स्थिरता किसी भी देश के सर्वांगीण विकास हेतु अत्यंत आवश्यक होती है। सामाजिक स्थिरता लाने हेतु उद्यमियों के द्वारा नैतिक मूल्यों की स्थापना, सामाजिक ढांचे में सुधार, समाजिक दोष का निवारण, उच्च जीवन स्तर, रोजगार अवसरों में वृद्धि, आत्मनिर्भरता की प्रति, सामाजिक समस्याओं में कमी, गरीबी दूर करना, सृजनात्मक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देना, महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देकर किया जा सकता है।
2. **संतुलित क्षेत्रीय विकास में उद्यमियों की भूमिकाः** देश के संतुलित क्षेत्रीय विकास में उद्यमी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस भूमिका के निर्वहन के अंतर्गत उद्यमियों के द्वारा स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहन, पिछडे क्षेत्र में विभिन्न संसाधनों का उपयोग, संपूर्ण क्षेत्र में रचनात्मक प्रवृत्तियां को बढ़ावा देना, ग्रामीण औद्योगीकरण, लघु व कुटीर उद्योगों को संरक्षण, विपणन शोध सहायता, सरकारी नीतियों व सहायता, भौगोलिक असमानताओं को दूर करके किया जा सकता है।
3. **स्थानीय मांग संवर्धन में उद्यमी की भूमिकाः** आर्थिक विकास की प्रक्रिया में क्रेताओं की मांग संवर्धन करने एवं उसे मांग की पूर्ति करने में उद्यमियों की महत्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका मानी जाती है। प्रत्येक उद्यमी अपने व्यावसायिक उपक्रम की स्थापना के दौरान क्रेताओ की स्थानीय स्तर पर आवश्यकताओं को समझना व उन्हें संतुष्ट करने का प्रयास करता है।

   स्थानीय मांग संवर्धित करने हेतू उद्यमी के द्वारा बाजार का सामान्य अध्ययन, उत्पादन अध्ययन ,स्थानीय मांग का अध्ययन, बाजार अनुसंधान, उत्पाद विकास आयोजन एवं क्रियान्वयन, नवाचार को बढ़ावा दिया जाता है।
4. **आर्थिक विकास को प्रोत्साहित एवं सहयोग करने में उद्यमी की भूमिकाः** आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने हेतु उद्यमी के द्वारा नवीन उपक्रमों की स्थापना, उत्पादक संसाधनों का संगठन करना, सहायक उद्योगों की स्थापना करना, पूरक उत्पाद का निर्माण करके ,वैकल्पिक उत्पादों की आपूर्ति करके, विक्रय उपरांत सेवा उपक्रमों की स्थापना करके, सामाजिक दायित्व का पालन करके, पूंजी निर्माण को प्रोत्साहन, लोक कल्याणकारी योजनाओं की क्रियान्वती ,औद्योगिक वातावरण का सृजनकरके किया जा सकता है।
5. **निर्यात संवर्धन में उद्यमी की भूमिकाः** आर्थिक विकास हेतु अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का सफल होना आवश्यक है, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय व्यापार के द्वारा विदेशी मुद्रा देश के अंदर आती है। विदेशी मुद्रा आने हेतु निर्यात का संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। एक उद्यमी के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रवेश संबंधी निर्णय, प्रेरक तत्व, प्रतिबंधों का का ज्ञान, उत्पाद संबंधी निर्णय, अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रवेश विधियां, वितरण या मध्यस्थ संबंधी निर्णय, संवर्धन करके निर्यात को बढ़ाया जाता है।
6. **विदेशी मुद्रा अर्जन एवं उद्यमीः** विदेशी मुद्रा अर्जन के क्षेत्र में उद्यमी द्वारा कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए जाते हैंः
   1. निर्यातक वस्तुओं के उत्पादन को प्राथमिकता देना।
   2. आयात प्रतिस्थापन नीति के अनुरूप कार्य करना।
   3. उद्यमी अपने श्रेष्ठ व्यवहारों आचरणों एवं ख्याति अर्जित कर निर्यात संवर्धन व विदेशी व्यापार में उचित स्थान बना सकता है।
   4. सरकार द्वारा प्रत्यक्ष निर्यात क्षेत्र एवं विशेष आर्थिक क्षेत्र में दी गई सुविधाओं भारी आयात का लाभ उठाकर निर्यात अधिनियम की कार्यक्रमों में सहयोग प्रदान कर सकता है।

5. अनुदान एवं ऋण की सुविधा प्राप्त करके विदेशी मुद्रा अर्जुन में वृद्धि के मार्ग ढूंढे जा सकते हैं।
6. निजी क्षेत्र की सहभागिता के साथ कुछ निर्यात विकास केंद्रों की स्थापना सरकार के द्वारा की गई है उद्यमियों द्वारा इन क्षेत्रों में उपलब्ध सुविधाओं के आधार पर निर्यात व्यापार में योगदान दिया जा सकता है।
7. उद्यमियों की नव प्रवर्तन एवं अवसरवादी व्यवहारों से वह उत्पादन में वृद्धि, नई योजनाओं द्वारा स्थानीय बाजार का विस्तार कर अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपनी सहभागिता विकसित कर सकते हैं।
8. स्थानीय संसाधनों व तकनीकी कौशलता से उन वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन कर सकते हैं, जिनका आयात किया जा रहा है। इससे हमारे देश में संसाधन क्षमता का विकास रोजगार में वृद्धि, पूंजी निर्माण की गतिशीलता और प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में राष्ट्रीय आय व आर्थिक समृद्धि में सुधार संभव हो सकता है। इससे विदेशी मुद्राओं के संचय पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा।
9. निर्यात व्यापार के अंतर्गत परिवहन, बीमा, विपणन और सॉफ्टवेयर आदि सेवाओं का विदेशी मुद्रा अर्जन में योगदान रहा है। इन क्षेत्रों के उद्यमियों के समक्ष अब गुणात्मकता विकसित कर नई वेबसाइट प्रणालियों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी पहचान बनाए रखना एक महत्वपूर्ण चुनौती बन गई है।

उद्यमियों की विशिष्ट भूमिका

आर्थिक विकास की क्रमागत अवस्था में उद्यमियों की निर्णायक एवं विशिष्ट भूमिका होती है। उनकी विशिष्ट भूमिका के संबंध में उनके कार्यों, योगदानों व व्यवहारो का अध्ययन इस प्रकार किया जा सकता हैः

1. **नव प्रवर्तक के रूप में उद्यमी की भूमिकाः** नव प्रवर्तक के रूप में उद्यमी व्यवसाय में कोई न कोई नवीन परिवर्तन करता है। नई उत्पादन विधि प्रयुक्त करता है,नई प्रबंधन व्यवस्था लागू करता है, नई संगठन संरचना का निर्धारण करता है, व नए बाजारों की खोज भी करता है।

   नव प्रवर्तक के रूप में उद्यमी समाज में नवीनता का प्रादुर्भव में, संसाधनों को उत्पादक कार्यों में लगाना, पूंजी निर्माण में सहायक, सेवा क्षेत्र का विस्तार, सरकारी नीतियों का क्रियान्वयन, उत्पादकता वृद्धि में सहायक, प्रौद्योगिकी का विकास, नवीन बाजारों की खोज, उत्पादक क्रियाओं को बढ़ावा एवं आधारभूत संरचना का निर्माण करके अपनी भूमिका का निर्वहन करता है।

2. **संसाधनों की प्राप्ति व संस्थापित क्षमता विकास में उद्यमियों की भूमिकाः** किसी भी देश की आर्थिक प्रगति में संसाधनों की उपलब्धता, प्राप्ति क्षमता निर्धारण एवं विकास आदि महत्वपूर्ण कार्य होते हैं। अतः संसाधनों से संबंधित उद्यमियों की भूमिका हेतु उसके द्वारा नवीन औद्योगिक इकाइयों की स्थापना, संसाधनों को संगठित व संबंधित करना, कुशल औद्योगिक संरचना का निर्माण करना, एवं अनुत्पादक खर्चों में कमी करके किया जाता है।

3. **रोजगार के अवसरों के सृजन में उद्यमी की भूमिकाः** उद्यमी अपने व्यवसाय से प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से रोजगार अवसरों का सृजन करते हैं। इस कार्य हेतु उद्यमी के द्वारा उद्यमी कार्य, व्यापारिक उपक्रमों की स्थापना संबंधित कार्य, वित्त व बैंकिंग संबंधी कार्य, परिवहन संबंधी कार्य, संचार सेवाएं, जनसंचार, गोदाम व भंडारण सेवाएं, पैकेजिंग सेवाएं, विज्ञापन सेवाएं, स्टॉक के संबंध में कार्य, परामर्श सेवाएं, सुरक्षा संबंधी सेवाएं, मनोरंजन कार्य, बीमा कार्य, संपत्ति सेवा द्वारा रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाया जाता है।

4. **सेवा क्षेत्र एवं उद्यमी की भूमिकाः** किसी भी देश के आर्थिक विकास में सेवा क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में वस्तुओं व सेवाओं की मांग में परिवर्तन, जीवन शैली में बदलाव, उपभोक्ताओं की रुचियां में वृद्धि, फैशन व खानपान में परिवर्तन, सॉफ्टवेयर सूचना तकनीक का फैलता जाल, प्रतिस्पर्धा में वृद्धि, लघु व्यवसाय के प्रति बढ़ता हुआ रुझान और उद्यमशील प्रवृत्तियों के नए आयाम आदि के कारण सेवा क्षेत्र की उपयोगिता व आवश्यकता बढ़ती जा रही है।

उद्यमी के द्वारा सेवा क्षेत्र में विशिष्टीकरण को बढ़ावा संसाधनों की गतिशीलता उपभोक्ताओं से प्रत्यक्ष संपर्क सामाजिक परिवर्तन एवं स्थानीय मांग उत्पन्न करके अपनी भूमिका का निर्वहन किया जाता है।

निष्कर्ष

उद्यमिता द्वारा सृजनात्मक एवं नव प्रवर्तन संबंधी कार्यों को प्रोत्साहन मिलता है, जिससे समाज को नित नवीन वस्तूयें प्राप्त होती है । उद्यमिता समाज के लोगों में नए–नए प्रयोग एवं अनुसंधान करने तथा उपयोगिताओं का सृजन करने की योग्यताओं का विकास करके, रोजगार के अवसरों में वृद्धि करने का कार्य करता है।

उद्यमिता के अंतर्गत एक उद्यमी सामान्य एवं विशिष्ट भूमिका का निर्वहन करते हुए संपूर्ण देश का ही नहीं वरन विश्व के आर्थिक विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।

संदर्भ सूची

1. माथुर एस पी, (2021) *भारत में उद्यमिता विकास,* हिमालय पब्लिकेशन हाउस, मुंबई।
2. विश्वास देवाशीश, (2021) *भारत में उद्यमिता विकास,* प्रथम संस्करण, प्रथम संस्करण रूटलेज़ प्रकाशन, यूनाइटेड किंगडम।
3. देसाई बसंत, (1999) लघु उद्योग एवं उद्यमिता, हिमालय पब्लिकेशन हाउस, मुंबई।
4. जैन पी.सी एवं शर्मा एन. एल (2006) *उद्यमिता के मूल आधार,* रमेश बुक डिपो, जयपुर।

––==00==––